शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनजाति महिलाओं में नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन

कु.शारदा भिंडे (शोधार्थी)
डॉ.मंजु शर्मा (प्राध्यापक)
माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मध्यप्रदेश में अनेक प्रकार की जनजातियाँ निवास करती हैं। महानगरों और नगरों से दूर निवास करने वाली जनजातियाँ आधुनिकता से काफी दूर हैं। आज भी इनमें परम्परागत मूल्य विद्यमान हैं। सूचना क्रान्ति का विस्तार इन जनजातियों तक हुआ है। जिससे ये जनजातियाँ भी प्रभावित हुई हैं। नगरीकरण का प्रभाव इन तक पंहुचा है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनजाति महिलाओं में नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

अलीराजपुर मध्यप्रदेश के इन्दौर संभाग का अनुसूचित जनजातीय बहुल जिला है। यह कृषि प्रधान देश भारत के मध्यप्रदेश राज्य के सुदूर दक्षिण-पश्चिम सीमा पर तथा मध्यप्रदेश की पश्चिम सीमा में विंध्याचल पर्वत के मालवा पठार की श्रेणियों में स्थित है। यह जिला पश्चिम में गुजरात, दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य की सीमा से लगे होने के कारण औद्योगिक दृष्टि से बहुत ही सुरम्य एवं महत्वपूर्ण है, उत्तर में माही तथा दक्षिण में पवित्र नर्मदा नहीं इसकी सीमा को प्रदर्शित करती है।

जिले की भौगोलिक स्थिति 21.30°, उत्तरी अक्षांश से 22.55° उत्तरी अक्षांश तक तथा 73.30° पूर्वी देशान्तर से 75.01° देशान्तर तक है। अलीराजपुर जिले का क्षेत्रफल 268958 हेक्टेयर भू-भाग फैला हुआ है, तथा समुद्र तल से ऊँचाई 317 मीटर है। अलीराजपुर को झाबुआ जिले से 17 मई 2008 को अलग कर एक जिले के रूप में दर्जा दिया गया। जिसमें 03 तहसील एवं 06 विकासखण्ड शामिल किए गए हैं। अलीराजपुर एक ऐसा जिला है, जिसमें महुआ के महकते, आम के रसीले और ताड़ के लम्बे-लम्बे पेड़ो की सघन हरियाली है। यहाँ भगोरिया का विशेष आकर्षण देखने को मिलता है। यहाँ के प्रमुख हाट वालपुर, सोण्डवा, छकतला, नानपुर आदि ग्रामों के भगोरिया हाट काफी प्रसिद्ध और चर्चित हैं।

अलीराजपुर जिले की जनसंख्या सम्बन्धी विवरण

जिले की कुल जनसंख्या 728677 है। जिसमें पुरूष जनसंख्या 365939, महिला जनसंख्या 362748 है तथा अलीराजपुर जिले की साक्षरता दर 37.60 प्रतिशत है, जिसमें महिला साक्षरता दर 31.0 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता दर 43.6 है और जिले का जनसंख्या घनत्व 229 तथा लिंगानुपात 1009 प्रति एक हजार पुरूष पर महिलायें है।

जनजाति

भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने से यह पता चलता है कि ब्रितानी संल्तनत ने जहां-जहां प्रवेश किया, वहां के निवासियों को अपने से अलग करने हेतु उन्हें 'नेखि' या 'ट्राइब' की संज्ञा

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दे दी। उसके पूर्व यहाँ के समुदाय विशेष के लोगों को आदिवासी या जनजाति कहा जाता था। जनजाति समाज में नगरीकरण होने से कृषि उपज तथा उपजों की खरीद उचित मूल्य पर किया जाना चाहिए। महिलाओं को गाँवों की उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की जानी चाहिए तथा उन दुकानों पर उचित निगरानी रखी जानी चाहिए। जनजातियों के बीच स्वास्थ्य शिक्षा का स्तर में नगरीकरण के प्रभाव हुआ है। जनजाति महिलाओं सरकारी समितियों तथा प्राथमिक कृषि सरकारी समितियों (पैक्स) को सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए। जनजाति महिलाओं को विभिन्न प्रकार के विकास के लिए ग्राम स्तर पर महिला मंडल की स्थापना। महिला विकास स्वयं जागरूकता या आत्मनिर्भर धीरे-धीरे नगरीकरण होने से उनके नामों से ही जाना जाता था। भारत प्राचीन ग्रंथों में इनका उल्लेख इनके अपने नामो तथा भील काल किरात निषाद इत्यादि के रूप में हुआ है। यहाँ हम वर्तमान भारतवर्ष की जनजातियों की संस्कृति के वर्णन से सम्बन्धित है। अतः इतिहास की घटनाओं को इंगित मात्र करते हुए हम वर्तमान समय में जनजाति के नाम की अवधारणाओं के चर्चा करेंगे।

परिभाषा

"जनजाति का अर्थ आर्थिक दृष्टि से ऐसा स्वतंत्र समूह है जो एक भाषा बोलता है और बाह्य आक्रमण से सुरक्षा के लिए संगठित होता है।"

गिलिन और गिलन के अनुसार, "जनजाति किसी भी ऐसे स्थानीय समुदायों के समूह को कहा जाता है, जो एक सामान्य भू-भाग पर निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का व्यवहार करता है।"

जनजाति महिला विकास विकासात्मक मानवशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विषय है। जनजाति महिला विकास के अंतर्गत जनजातियों महिलाएंे के विकास हेतु किए गए प्रयासों का अध्ययन किया जाता है। आज विश्व के जिन स्थानों के जनजाति महिलाऐं पाई जाती है, वहां की सरकारों द्वारा उन्हें विकास कार्यक्रम के माध्यम से राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास किया जा सकता है।

जनजातियों की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से जंगल, पहाड़ तथा उसके आसपास की भूमि पर निर्भर है, उनकी अर्थव्यवस्था अस्तित्व अभिमुख है। जनजातीय महिलाए समाज के उत्पादन, उपभोग के लिए किया जाता है। भारतीय संविधान में दलितों, पिछड़ी कमजोर वर्गो इत्यादि के लिए सुरक्षात्मक व्यवस्था दी गई तथा उनको विकसित बनाने के लिए कार्यक्रम के सूत्रीकरण एवं क्रियान्वयन पर बल दिया गया। भारतीय संविधान में जनजातियों की सुरक्षा के साथ-साथ आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक तथा स्वास्थ्य विकास की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई।

मध्यप्रदेश की जनजातियों में गोंड जनजाति के बाद भील जनजाति का दूसरा स्थान है। इस जनजाति की संख्या मध्यप्रदेश में काफी अधिक है। यह जनजाति आदिकाल से ही महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान में रहती आई है, मध्यप्रदेश में यह जनजाति प्रमुख रूप से झाबुआ, अलीराजपुर, धार तथा पश्चिम निमाड़, इन्दौर, रतलाम, ग्वालियर आदि के जंगली स्थानों पर रहती है।

उद्देश्य

1 जनजाति महिलाओं के प्रति परिवार में नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना ।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

2 जनजाति महिलाओं का नगरीकरण में समाज का प्रभाव का अध्ययन ।

3 जनजाति महिलाओं के प्रति जागरूकता कर अध्ययन ज्ञात करना ।

उपकल्पना

1 जनजाति महिलाओं के परिवार के नगरीकरण होने से कार्य सम्बन्धी अध्ययन किया जायेगा।

2 जनजाति महिलाओं के प्रति समाज में पड़ने वाले नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा।

3 जनजाति महिलाओं के प्रति जागरूकता के सम्बन्धी अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में निदर्शन के चयन पश्चिम भाग के स्थित अलीराजपुर जिले को लिया गया ।

निदर्शन का आकार

प्रस्तुत अध्ययन के लिए 50 निदर्शन का चयन किया गया जिसमें जनजाति महिलायें, भील, भिलाला को लिया गया।

निदर्शन का चुनाव

निदर्शन का चुनाव करने के लिए अलीराजपुर जिले को 3 तहसील, 6 विकासखंड में बांटा गया है तथा दैव निदर्शन की लाटरी विधि के द्वारा प्रत्येक तहसील से चार-चार गाँव का चुनाव किया गया। चयन लाटरी विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक गाँव में से 8 जनजाति महिलाओं को लिया गया।

तथ्यों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्र किये गये तथ्यों का विश्लेषण तथा परिणाम निष्कर्ष हेतु प्रतिशत एवं सांख्यिकी तकनीक में से कोई - वर्ग (Z2) परीक्षण का उपयोग किया गया है ।

तालिका क्रमांक 1

समाज पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी जानकारी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत	स्वतंत्रता का अंश	ईकाई वर्ग का मान (Z2)
1	आर्थिक विकास	10	20	7.815	
2	शैक्षणिक	20	40	3	
3.	सामाजिक	15	30		
4.	राजनीतिक	5	10		
	योग	50	100		

सार्थकता स्तर

01 .05

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि आर्थिक विकास की महिलाओं की संख्या 10 व 20 प्रतिशत पाया गया जबकि शैक्षणिक सम्बन्धित महिलाओं की संख्या 20 व 40 प्रतिशत पाया गया और सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित महिलाओं की जानकारी संख्या 15 व 30 प्रतिशत पाया गया व राजनीतिक से सम्बन्धित महिलाओं की संख्या 5 व 10 प्रतिशत पाया गया।

इसके काई वर्ग का मान 7.815 प्राप्त हुआ जो 3 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर के आवश्यक मान से अधिक है। अतः समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का सार्थक अन्तर पाया गया।

तालिका क्रमांक 2

परिवार में नगरीकरण होने से कार्य सम्बन्धी जानकारी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत	स्वतंत्रता का अंश	ईकाई वर्ग का मान (Z2)
1	कृषि	17	34	3	7.815
2	बाजार	10	20		

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

	में मजदूरी करना				
3.	दूध बेचना	13	26		
4.	नौकरी	10	20		
	योग	50	10		

सार्थकता स्तर

05

05

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि कृषि करने वाली महिलाओं की संख्या 17 व 34 प्रतिशत पाया गया, जबकि बाजार में मजदूरी करने वाली महिलाऐं की संख्या 10 व 20 प्रतिशत पाया गया, बाजार में दूध बेचने वाली महिलाओं की संख्या 13 व 26 प्रतिशत पाया गया, नौकरी करने वाली महिलाओं की संख्या 10 व 20 प्रतिशत पाया गया।

तालिका क्रमांक 3

महिला के प्रति जागरूकता सम्बन्धी जानकारी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत	स्वतंत्रता का अंश	ईकाई वर्ग का मान (Z2)
1	नौकरी	15	30	3	7.81
2	आत्मनिर्भर	9	18		
3.	बौद्धिक विकास	6	12		
4.	घर का काम करना	20	40		
	योग	50	100		

सार्थकता स्तर

01

05

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट है कि घर का काम करने वाली जनजाति महिलाओं की संख्या 20 व 40 प्रतिशत पाया गया, नौकरी सम्बन्धी महिलाओं की संख्या 15 व 30 प्रतिशत पाया गया, आत्मनिर्भर सम्बन्धी महिलाओं की संख्या 9 व 18 प्रतिशत पाया गया, बौद्धिक विकास सम्बन्धी जानकारी की संख्या 6 व 12 प्रतिशत पाया गया।

इसके काई वर्ग का मान 7.81 प्राप्त हुआ जो 3 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर के आवश्यक मान से अधिक है। अतः महिलाओं के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रभाव का सार्थक अन्तर पाया गया।

तालिका क्रमांक 4

जनजाति महिलाओं के शिक्षा सम्बन्धी जानकारी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत	स्वतंत्रता का अंश	ईकाई वर्ग का मान (Z2)
1	प्राथमिक माध्यमिक	10	20	3	7.815
2	हाईस्कूल हायर से.	10	20		
3.	स्नातक स्नातकोत्तर	10	20		
4.	अशिक्षित	20	40		
	योग	50	100		

सार्थकता स्तर

05

01

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राथमिक माध्यमिक शिक्षा का स्तर महिलाओं की संख्या 10 व 20 प्रतिशत पाया गया, हाईस्कूल हायर सेकेण्डरी शिक्षा स्तर में महिलाओं की संख्या 10

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व 20 प्रतिशत पाया गया, स्नातक स्नातकोत्तर शिक्षा का स्तर महिलाओं की संख्या 10 व 20 प्रतिशत पाया गया।

अशिक्षित महिलाओं की संख्या 20 व 40 प्रतिशत पाया गया। इसके काई वर्ग का मान 7.815 प्राप्त हुआ जो 3 स्वतंत्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर के आवश्यक मान से अधिक है। अतः जनजाति महिलाओं के शिक्षा सम्बन्धी नगरीकरण का प्रभाव का सार्थक अंतर पाया गया।

सुझाव

1 इसके परिवारों में अधिक बच्चों की यह अभी भी कई परिवारों में अधिक पायी जाती है । जिसे आर्थिक, सामाजिक रूप से सहयोग मानते है। इनकी इस गलत फेहमी को दूर करना होगा।

2 सरकार द्वारा इन्हें प्रेरित करने के लिए अनेक प्रकार की योजना चलाई जा रही है।

3 नगरीकरण के प्रभाव होने से पुरूष व महिलाओं में काफी परिवर्तन हो रहा है। क्योंकि आजकल महिलायें अन्य काम करने लगती है।

4 पर्दा प्रथा के कारण स्त्रियों की स्थिति निम्न है। इस पर्दा प्रथा में शिक्षा की आवश्यकता जरूरी है। 5 जनजाति महिलाओं के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का आर्थिक विकास सामाजिक शैक्षणिक किया जा रहा है।

6 नगरीकरण होने से महिलायें अधिक काम करने शहर की ओर जाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 मुकर्जी रवीन्द्रनाथ (2012) सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा विवेक प्रकाश 7 - यू.ए. जवाहर नगर दिल्ली - 7 पृष्ठ क्रं. 389

2 जैन अरूण कुमार जनजातीय भारत प्रकाशन महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 237 विश्वकर्मा नगर, इन्दौर (म.प्र.) पृष्ठ क्रं. 249

3 उपाध्याय विजयशंकर एवं शर्मा विजयप्रकाश (2009) भारत की जनजातीय संस्कृति प्रकाशक मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

4 दीक्षित डॉ.. ध्रुव कुमार ग्रामीण एवं नगरीय समाज शास्त्र जनजातीय समाज का समाज शास्त्र प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी खजूरी बाजार, इन्दौर

5 कपिल डॉ. एच.के. (2009) सांख्यिकी के मूल तत्व प्रकाशक अग्रवाल पब्लिकेशन्स 28/115, ज्योति ब्लाक, संजय प्लेस, आगरा - 2 पृष्ठ क्रं. 476

स्रोत - शर्मा डॉ.., सोलंकी सुरेन्द्र, पृष्ठ क्रं. 18

स्रोत: जैन अरूण पृष्ठ क्रं. 282-283

स्रोत: उपाध्याय विजय शंकर शर्मा प्रकाश विजय पृष्ठ क्रं. 1-2

स्रोत: जैन कुमार अरूण डॉ.. एवं शर्मा एन.ए. डॉ.. पृ. क्रं. 249-250

स्रोत: मुकर्जी रविन्द्रनाथ डॉ.. (2012) पृष्ठ क्रं. 389

स्रोत: कपिल डॉ. एच.के. (2009) पृष्ठ 476